

DR. DEVENDRA D. PATEL

Dr. Devendra D. Patel was born on September 15, 1932 in middle class farming community at Bhadran, Anand District of Gujarat State. His first day of medical education was 15th June, 1951 the day on which he lost his father. However, he completed medical education, passed MBBS and MS, Gujarat University and proceeded to England in 1960 with foreign exchange of 3 pounds and over a period of time obtained FRCS (Eng) and FRCS (Edin). During this period, he had moral support of his widow mother and his wife Dr. Uma Patel. He then proceeded to USA and worked as senior surgical fellow at LANEY Clinic Hospital, Boston, USA and obtained experience and training in Oncology. While in USA, he was selected as Pool Officer by Department of Science and Technology, Govt. of India, a scheme for support for returning qualified Indian citizens. He returned back to Ahmedabad, India in January, 1966.

2. On his return, Dr. Patel was appointed as Surgeon Incharge and later on Chief of Surgery and he worked in that position from 1966 to 1990. His initial appointment was at M.P. Shah Cancer Hospital, later designated as Gujarat Cancer & Research Institute in 1972, which is recognized by Govt. of India as Regional Cancer Center and recently converted into State Cancer Institute (SCI) by Govt. of India. During his career as Chief of Surgical Oncology, he performed 15,000 major and 25,000 minor cancer operations and examined about 75000 cancer patients at an honorarium of Rs.5001- per month. In order to promote professional and public education in cancer, he established Community Oncology Center at Vasna wherein exhibition for public education on various aspects of cancer, cancer related health check up, de-addiction clinic and hospice care.

3. As Deputy Director and Director of the Institute over a period of 13 years, he raised the level of Cancer Institute at national level. In 1966, the hospital was started with 40 indoor beds and in the year 2017, GCRI has 650 indoor beds. He played a leadership role in national and district cancer control programme and established a major cancer center. This Cancer center provides modern and comprehensive cancer care to semi urban and rural population of Gujarat and adjoining states like Rajasthan and Madhya Pradesh either at complimentary or affordable rates. This Institute also helps needy familles, MA Yojana, MA Vatsalya yojana as per the guidelines of Chief Minister of Gujarat.

4. He pursued academic activities from day one. He also established MCh Surgical Oncology and DM Medical Oncology super speciality qualifications by Gujarat Cancer Society. He has trained more than 100 young surgeons to become competent cancer surgeons. He was awarded Dr. B.C. Roy Award (1998) as Excellent Medical Teacher. He also paid attention in training nurses in Oncology.

5. He delivered about 20 orations, read 104 publications and attended 75 national and international conferences to deliver lectures on the subject of cancer in Gujarat and India. Major orations are Prof. SP. Shrivastav Oration, UP State Chapter Associations of Surgeons of India-1991. Smt. Bimla Sahay Cancer Award — 1993 Banaras Hindu University, Varanasi, UP, Professor S.P. Mishra Award, King George Medical College, Lucknow — 1994, Col. Padalai Oration of Association of Surgens of India 1996, Sir Dorab Tata Oration Indian Society of Oncology, Mumbai, Dr. Sarosh Gupta Oration, Cancer Center and Welfare Home, Kolkatta, 2011 and S. Krishnamurthy oration, Cancer Institute, Adyar, Chennai 2014.

6. He is past president of Indian Society of Oncology-1990-1992, President, Indian Society of Surgical Oncology 1984, Founder member of Association of Surgeons of India — 2011. For professional and social responsibility, he gave donation to Gujarat Cancer Society, Sadvichar Parivar, UNICEF and Leprosy Mission, Trust, India and Polio Eradication Programme as a Rotarian. He is multiple Paul Harris Fellow Rotary Club of Gujarat. He has been selected as Honorary Fellow of Surgical Oncology the Only Non-British Surgeon to get this honour.



डॉ. देवेंद्र डी. पटेल

डॉ. देवेंद्र डी. पटेल का जन्म 15 सितंबर, 1932 को गुजरात राज्य के आणंद के भद्रन में एक मध्यम वर्गीय किसान समुदाय में हुआ था। आपकी चिकित्सा शिक्षा का पहला दिन 15 जून, 1951 था, जिस दिन आपके पिता का स्वर्गवास हो गया था। तथापि आपने गुजरात विश्वविद्यालय से एम.बी.बी.एस. तथा एम.एस. की पढ़ाई पूरी की और वर्ष 1960 में तीन पाउंड की विदेशी करेंसी के साथ इंग्लैंड चले गए तथा कुछ समय के बाद एफ आर सी एस (इंग्लैंड) एवं एफ आर सी एस (एडिन) की उपाधियां प्राप्त की। इस अवधि के दौरान आपकी विधवा माता तथा आपकी पत्नी डाक्टर उमा पटेल ने नैतिक समर्थन प्रदान किया था। इसके उपरांत, आप यू.एस.ए. चले गए और वहां लैने क्लीनिक हॉस्पिटल, बोस्टन, यू.एस.ए. में वरिष्ठ सर्जिकल फैलो के रूप में कार्य किया तथा ऑकोलोजी में अनुभव और प्रशिक्षण प्राप्त किया। यू.एस.ए. में रहते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार द्वारा आपको पूल अधिकारी के रूप में चयनित किया गया था। यह एक ऐसी योजना थी जो स्वदेश लौटने वाले उच्च योग्यता प्राप्त भारतीय नागरिकों की सहायता के लिए प्रचलित थी। आप जनवरी 1966 में अहमदाबाद, भारत वापस आ गए थे।

2. आपके वापस आने पर आपको प्रभारी सर्जन के रूप में नियुक्त किया गया था और बाद में शल्य-चिकित्सा के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। इस पद पर आपने वर्ष 1966 से लेकर वर्ष 1990 तक कार्य किया। आपकी आरंभिक नियुक्ति एम.पी. शाह कैंसर अस्पताल में हुई थी, जिसे बाद में वर्ष 1962 में गुजरात कैंसर एवं अनुसंधान संस्थान का नाम दिया गया था जो क्षेत्रीय कैंसर केन्द्र के रूप में भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है जिसे हाल में ही भारत सरकार द्वारा राज्य कैंसर संस्थान में परिवर्तित कर दिया गया है। सर्जिकल ऑकोलोजी के अध्यक्ष के रूप में अपने कैरियर के दौरान आपने 15000 बड़े और 25000 छोटे कैंसर ऑपरेशन किये और 500 रुपए प्रति माह की मानद धनराशि पर लगभग 75000 कैंसर रोगियों की जांच की। कैंसर के बारे में व्यावसायिक एवं सार्वजनिक शिक्षा को विकसित करने के लिए आपने वासन में कम्युनिटी ऑकोलोजी केन्द्र की स्थापना की जिसमें कैंसर के विभिन्न पहलुओं पर सार्वजनिक शिक्षा, कैंसर से सम्बद्ध स्वास्थ्य की जांच, डी-एडिक्शन क्लीनिक तथा हासपाइस देखभाल का प्रदर्शन किया जाता है।

3. तेरह वर्ष की अवधि तक संस्थान के उपनिदेशक तथा निदेशक के रूप में कार्य करते हुए आपने इस कैंसर संस्थान का स्तर ऊंचा करके राष्ट्रीय स्तर का बना दिया। वर्ष 1966 में ये अस्पताल चालीस बिस्तर से शुरू हुआ था और वर्ष 2016 में गुजरात कैंसर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट 650 बिस्तरों वाला अस्पताल बन गया है। आपने राष्ट्रीय एवं जिला कैंसर नियंत्रण कार्यक्रम में अग्रणी भूमिका निभाई है और एक बड़े कैंसर केन्द्र की स्थापना की। ये कैंसर केन्द्र गुजरात तथा इससे जुड़े राज्यों जैसे राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की अर्ध-शहरी एवं ग्रामीण आबादी को मुफ्त या किफायती दरों पर आधुनिक एवं व्यापक कैंसर देखभाल मुहैया कराता है। ये संस्थान गुजरात के मुख्यमंत्री के दिशानिर्देशानुसार जरूरतमंद परिवारों, एम.ए. योजना, एम.ए. वात्सल्य योजना की मदद भी करता है।

4. आपने गुजरात कैंसर सोसायटी द्वारा एम.सी.एच. सर्जिकल ऑकोलोजी तथा डी.एम. मेडिकल ऑकोलोजी सुपर स्पेशियल्टी योग्यताएं स्थापित की हैं। आपने सौ से भी अधिक युवा सर्जनों को सक्षम कैंसर सर्जन बनाने के लिए प्रशिक्षित किया है। आपको उत्कृष्ट चिकित्सा प्राध्यापक के रूप में डॉक्टर बी.सी.रॉय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने ऑकोलोजी में परिचारिकाओं के प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया है।

5. आपने गुजरात तथा भारत में लगभग 20 भाषण दिये हैं 104 प्रकाशनों को पढ़ा है तथा कैंसर विषय पर व्याख्यान देने के लिए 65 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में हिस्सा लिया है। बड़े सम्भाषणों में प्रोफेसर एस.पी. श्रीवास्तव सम्भाषण तथा यू.पी. स्टेट चेप्टर एसोसिएशन ऑफ सर्जन ऑफ इंडिया – 1991 शामिल हैं। आपको बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से श्रीमती विमला सहाय कैंसर पुरस्कार-1993, किंगजार्ज मेडिकल कॉलेज, लखनऊ-1994 का प्रोफेसर एस.पी.मिश्रा पुरस्कार, कर्नल पडलाई ओरेशन ऑफ एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया 1996 पुरस्कार, सर दोराँब टाटा ओरेशन इंडियन सोसायटी ऑफ ऑकोलॉजी, मुंबई, डॉक्टर सरोश गुप्ता ओरेशन कैंसर सेंटर एवं वेलफेयर होम, कोलकता, 2011 एवं एस. कृष्णामूर्ति ओरेशन, कैंसर इंस्टीटयूट, आड्यार, चेन्नई 2014 जैसे अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।

6. आप इंडियन सोसायटी ऑफ ऑकोलॉजी 1990-1991 के भूतपूर्व अध्यक्ष, इंडियन सोसायटी ऑफ सर्जिकल ऑकोलॉजी 1984 के अध्यक्ष, एसोसिएशन ऑफ सर्जन्स ऑफ इंडिया-2011 के संस्थापक सदस्य हैं। व्यावसायिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए आपने एक रोटेरियन के रूप में गुजरात कैंसर सोसायटी सदविचार परिवार, यूनिसेफ एवं लेप्रोसी- मिशन, ट्रस्ट, इंडिया तथा पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम के लिये दान दिया है। आपको सर्जिकल ऑकोलॉजी के मानद फेलो के रूप में चुना गया है, यह सम्मान पाने वाले आप एकमात्र गैर ब्रिटिश सर्जन हैं।